Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(1), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.06
www.ijmer.in

RELEVANCE OF SARVODAYA CHINTAN
(सर्वोदय चिंतन की वर्तमान में प्रासंगिकत

Dr. Shikha Agarwal (डॉ. शिखा अग्रवाल)
Associate Professor (सह आचार्य)
Government Girls College (राजकीय कन्या महाविद्यालय)
Sujangarh, (Churu), Rajasthan, India (सुजानगढ़, (चूरू), राजस्थान)

Abstract

Various organizations and philosophers have played an important role in ending the trend of increasing inequality, war and exploitation in the world. But this role remained institutional or only in the form of contemplation. Gandhi gives the philosophy of non-violent way of establishing an egalitarian society without exploitation by bringing changes in the psyche of the individual through Sarvodaya thought. In this the end is each individual himself and the means is non-violence. Its objective is to take development to each and every person who is most deprived and exploited in the society.

Keywords: Sarvodaya, Class Struggle, Equality, Utilitarianism, Society Without Exploitation.

सार संक्षेप

विश्व में बढ़ती असमानता, युद्ध और शोषण की प्रवृत्ति खत्म करने में विभिन्न संगठनों और दार्शनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परंतु यह भूमिका संस्थागत अथवा केवल चिंतन के रूप में ही रह गई। गांधी अहिंसक तरीके से सर्वोदय विचार के माध्यम से व्यक्ति के मानस में परिवर्तन लाकर शोषण विहीन समतामूलक समाज की स्थापना का दर्शन देते हैं। इसमें साध्य प्रत्येक व्यक्ति स्वयं है और साधन अहिंसा है। इसका उद्देश्य, प्रत्येक उस व्यक्ति तक विकास को ले जाना है जो समाज में सब अधिक से वंचित और शोषित है।

मुख्य शब्द - सर्वोदय, वर्ग संघर्ष, समानता, उपयोगितावाद, शोषणविहीन समाज

वर्तमान में युग वैश्वीकरण का वह युग है रहा है जिसमें माना जा रहा है कि व्यक्ति का विकास हो रहा है और वह पहले के मुकाबले अधिक संपन्न हुआ है। लेकिन सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक और पर्यावरण संबंधी समस्याएं नवीन अविष्कारों और तकनीक के बावजूद भी आज तक बनी हुई है। महात्मा गांधी ने इन समस्याओं का जिक्र अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में 1908 में ही कर दिया था। उन्होंने मानवता को बचाने के लिए अहिंसा को एक तकनीक के रूप में दिया जिससे संपूर्ण समाज का विकास बिना रक्तपात किए, ह्रदय परिवर्तन के माध्यम से किया जा सके और एक वर्ग - विहीन, शोषण विहीन, समतामूलक समाज की स्थापना की जा सके। गांधी का सर्वोदय दर्शन अहिंसा के साथ-साथ नागरिकों को अधिकार तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाने का महत्वपूर्ण साधन है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(1), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.06
www.ijmer.in

सर्वोदय का अर्थ - सर्वोदय शब्द सर्व + उदय से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है 'सब का उदय'।[1] सब प्रकार से उदय।[2] सर्वोदय का लक्ष्य है -'सब के द्वारा सबका उदय', इसका साधन है - ' सब के द्वारा उदय' और इसकी विशेषता है -'सब प्रकार से उदय'। गांधी सब प्रकार से उदय की धारणा को केवल भौतिकवादी, सुखवादी, अनैतिकता और असमानता वादी विचार के रूप में स्वीकार नहीं करते। वे सर्वोदय को एक ऐसी धारणा का रूप देते हैं जिसमें लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के लक्ष्यों की सिद्धि का आदर्श प्राप्त किया जा सके है।

विभिन्न भारतीय धर्म ग्रंथों में सर्वोदय की अलग तरीके से व्याख्या की गई है। वेदों में सभी प्राणियों के उदय को महत्व दिया गया है[3] तो महाभारत में सर्वे भवंतु सुखिनः .. में सर्वोदय विचार ही है। गीता का 'आत्मवत सर्वभूतेषु' और ' सर्वभूत हितेरता' भी सर्वोदय चिंतन पर आधारित है। संभवत है सर्वोदय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जैन आचार्य समंत भद्र ने ' सर्वोदय तीर्थ' के रूप में किया था। बौद्ध धर्म में 'संघ' और 'बोधिसत्व' की धारणा का आधार सर्वोदय की भावना ही है। आधुनिक युग में गांधी ने इसका प्रयोग रस्किन की पुस्तक 'अनइू दिस लास्ट' के आधार पर किया है। रस्किन की यह पुस्तक तीन बातों को प्रकट करती है -

1. व्यक्ति की भलाई सब की भलाई में निहित है।
2. वकील और नाई दोनों का काम समान मूल्य का है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय द्वारा अपनी आजीविका चलाने का अधिकार है।
3. मजदूर, किसान और कारीगर का जीवन ही सर्वोत्कृष्ट जीवन है।

गांधी ऐसे सिद्धांत पर आधारित सर्वोदय समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें हर एक व्यक्ति के विकास से ही सबका सामूहिक विकास हो। मानसिक और शारीरिक श्रम में कोई भेदभाव या ऊंच-नीच नहीं हो और जीवन चलाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति श्रम करें जिससे शोषण रहित समाज का निर्माण हो सके।

महात्मा गांधी का सर्वोदय विचार पश्चिम के उपयोगितावाद से सर्वथा भिन्न है। यह चिंतन बेंथम द्वारा दिया गया और इसमें जे. एस. मिल द्वारा संशोधन किया गया था। उपयोगितावाद 'स्व सुख' पर आधारित भौतिकवादी चिंतन है जिसमें नैतिकता और अनैतिकता का विचार नहीं किया गया है। यह विचार अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख को महत्व देता है। लेकिन गांधी विचार दर्शन में सर्व को यानी सब के उत्थान को महत्व दिया गया है। सब के उत्थान की धारणा अधिकतम की धारणा से बहुत आगे है क्योंकि अधिकतम का चिंतन समाज में संघर्ष को जन्म देगा और अल्पसंख्या में मौजूद लोगों को छोड़ देगा जबकि सर्व की धारणा में अहिंसक चिंतन है जो बिना किसी भेदभाव के सबको साथ लेकर चलता है। सर्वोदय का विचार त्याग पर आधारित है सुखवाद पर नहीं। सर्वोदय विचार में उपयोगिता बाद की तरह

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(1), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.06
www.ijmer.in

हत्या और युद्ध को नैतिक नहीं माना गया है।[4] यह चिंतन समाज के सबसे अंतिम, वंचित व्यक्ति के विकास को महत्व देता है।

सर्वोदय की संकल्पना मार्क्स की वर्ग संघर्ष की धारणा से पूर्णतया भिन्न है। हित और वर्ग संघर्ष व्यक्ति के स्वार्थ से उत्पन्न होते हैं। जब कुछ लोग या कोई वर्ग विशेष किसी वर्ग को उसके अधिकारों से वंचित रखने का प्रयास करता है तो कालांतर में वर्ग संघर्ष उत्पन्न होता है। मार्क्स ने श्रमिक और पूंजीपति के हित संघर्ष को वर्ग संघर्ष के रूप में देखा है। परंतु गांधी पूंजी पतियों को ट्रस्टी बनाकर संपत्ति को सामाजिक हित में लगाने का सिद्धांत (ट्रस्टीशिप सिद्धांत) देते हैं जिससे पूंजीपति की संपत्ति समाज के अंतिम वंचित व्यक्ति के विकास में उपयोगी सिद्ध हो सके।

सर्वोदय सुखवाद से भी अलग है। सुखवाद में केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति ही अंतिम लक्ष्य होता है जबकि सर्वोदय अध्यात्म वाद पर आधारित है। आध्यात्मिक अनुभव के लिए सर्वोदय की धारणा, दंड और हिंसा शक्ति को खत्म कर करुणा और अहिंसा को स्थापित करती है। सर्वोदय चिंतन केवल आत्मिक सुख को नहीं बल्कि नैतिक और संपूर्ण समाज के हित में कार्य करने पर आधारित है।

वास्तव में सर्वोदय, 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत से आगे 'दूसरों को जिलाने के लिए जियो' पर आधारित है। हालांकि जियो और जीने दो का सिद्धांत भी हिंसा पर आधारित नहीं है परंतु वह दूसरों के विकास में अपना योगदान देने को प्रेरित नहीं करता। सर्वोदय विचार वस्तुतः सामाजिक नैतिकता पर आधारित है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के विकास में सहायक बनेगा। यदि समाज का वास्तव में विकास करना है तो व्यक्ति को बांटने वाले तत्वों धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्रवाद के आधार पर मौजूद वर्तमान व्यवस्था के स्थान पर सबके उत्थान पर आधारित विचार को अपनाना आवश्यक है। यह सिद्धांत व्यक्ति के केवल बाह्य विकास को महत्व नहीं देता बल्कि आंतरिक विकास को अधिक महत्व देता है जिससे परस्पर संघर्ष समाप्त होकर समरसता पूर्ण, सर्वोदय समाज की स्थापना होना सुनिश्चित हो सके।

महात्मा गांधी की दृढ़ मान्यता थी कि पृथ्वी पर हर व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन है लेकिन हर व्यक्ति के लालच के लिए नहीं है। यदि व्यक्ति लालच मुक्त होकर सादा जीवन जिए तो प्रत्येक को उत्पादन और आजीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त हो सकते हैं जिससे बेरोजगारी दूर होगी। सर्वोदय आंदोलन में कृषि, उद्योग और अन्य सभी क्षेत्रों में ऐसी योजनाएं बनेंगी जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग काम पा सकें ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर उद्योगों की स्थापना होने से सबकी भागीदारी प्राप्त होगी। वर्तमान में स्वयं सहायता समूह इस

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(1), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.06
www.ijmer.in

अवधारणा को ही आगे बढ़ा रहे हैं। एक तरह से यह आत्मनिर्भर समाजवादी व्यवस्था की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम है -

1. इसमें कोई केंद्रीयकृत व्यवस्था ना होकर विकेंद्रित व्यवस्था होगी।
2. इसका उद्देश्य सेवा से जुड़ा होगा।
3. प्रेम, बंधुत्व, सत्य, अहिंसा और आत्म त्याग पर आधारित विचार है।
4. यह एक ऐसी समाजवादी धारणा है जिसमें व्यक्ति का संपूर्ण विकास होगा।
5. यह समानता और स्वतंत्रता पर आधारित विचार है जिसमें शोषण, प्रतिस्पर्धा और वर्ग संघर्ष का अभाव होगा।
6. निजी संपत्ति और सामाजिक शोषण इसका आधार नहीं है।
7. सर्वोदय व्यक्तियों की परस्पर अंतर निर्भरता पर आधारित है।
8. बिना किसी भेदभाव के समाज के अंतिम वंचित व्यक्ति के उत्थान में विश्वास रखता है।

सर्वोदय अपने आस-पास के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को संवेदनशील बना कर समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करने का साधन है। इसका उद्देश्य अमीर की शैतानियत और गरीब की हैवानियत खत्म करके दोनों की इंसानियत को बचाना और बढ़ाना है।[5]

संदर्भ सूची

1. गांधी, मो.क., नवजीवन (हिंदी) 18.9.1946 और 'सर्वोदय' प्रस्तावना, पृ.1
2. मशरूवाला किशोरी, हरिजन सेवक, 27.3.1949
3. भावे विनोबा, सर्वोदय विचार और स्वराज्य शास्त्र, पृ. 84
4. गांधी, एम.के. हिंदू धर्म, पृ 209
5. डॉ. रामजी सिंह, गांधी दर्शन मीमांसा पृ. 44